Ancient and New Playing Style of the Punjab Gharana of Tabla: A Brief Discussion

(तबले के पंजाब घराने की प्राचीन व नवीन वादन शैली: एक संक्षिप्त विवेचन)

Dr. Deep Shikha Singh
Assistant Professor, Department of Music,
Sahu Ramswaroop Mahila Mahavidyalaya, Bareilly
Corresponding Author: deepshikhasinghhh@gmail.com

DOI: 10.52984/ijomrc1312

सार:

प्रस्तुत शोध पत्र के अन्तर्गत तबले के पंजाब घराने में प्रचलित वादन शैली व वर्तमान में विशेष रूप से उस्ताद अल्लारखा खां जी द्वारा किये गये विभिन्न बंदिशों जैसेपेशकार-, कायदे, क्लिष्ट तिहाईया, संगत हेतु कठिन रचनाओं द्वारा विकसित नवीन वादन शैली पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। इसके अन्तर्गत पंजाब घराने की वादन शैली में किनकिन वंदिशों का समावेश था विशेष रूप से दीपचंदी अंग - की बंदिशें, लमक्षण, कायदें, बढैया की गते, रेले, गते इत्यादि का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया गया है व निष्कर्ष रूप में तबले की पंजाब घराने की प्राचीन व नवीन वादन शैली के संयोग से विकसित वादन शैली को दर्शाने का प्रयास किया गया है।

संकेत -*थाप, वाज, वंदिश, मिश्रजाति, पेशकार*

परिचय- तबला संगीत का एक प्रमुख वाद्य है व इसके वादन हेतु छः घराने प्रचलित है जिनकी अपनी अपनी वादन शैलियाँ हैं जो क्रमशः दिल्ली, अजराड़ा, लखनऊ, फर्रूखाबाद, बनारस व पंजाब है। इस शोध पत्र में पंजाब घराने की वादन शैली व अल्लारखा खॉ व जाकिर हुसैन जी के योगदान को दर्शाने का प्रयास किया है। इस विषय पर आगे बढ़ने से पूर्व वादन शैली से क्या तात्पर्य है ये जानना नितान्त आवश्यक है 1"वादन शैली से तात्पर्य किसी भी कला के प्रस्तुतिकरण का विशिष्ट ढंग है, कला का प्रयोगिक पक्ष जब एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में परम्परागत रूप से चलता रहता है तो उनमें निरन्तर परिवर्तन व सुधारों के कारण प्रयोगिक पक्ष परिष्कृत व सुसंस्कृत होकर समाज में प्रतिष्ठित हो जाता है। इस प्रक्रिया के अनुसार गायन, वादन व नृत्य के निर्माण एवं विकास में जहाँ एक पीढ़ी के कलाकार को प्राप्त होने वाली सम्प्रदाय या घराने की शिक्षा का आधार रहता है वहाँ उस परम्परा के प्रत्येक कलाकार की स्वयं की अभिरूचि परिकल्पना और उस कला विशेष या अन्य कलाओं के समकालीन कलाकारों की संगति का प्रभाव भी शैली के विकास में सहायक होता है।

2 तबले की परम्परागत वादन शैलियों में थाप और चाट के प्रयोग से व्यापक रूप से दो बाजो की विकसित परम्परा दिखाई दी विभिन्न क्षेत्रों में इन्हीं दो मूल वादन विधियों से विविध वादन शैलियाँ विकसित हुई है। इन बाजों के अन्तर्गत विभिन्न घरानों के तबला वादकों ने अपनी प्रतिभा, बोल संरचना तथा अन्य वादन तत्वों के आधार पर जो कलात्मक विशेषताएँ पैदा की उनसे ही आगे चलकर तबला वादन की कई विशिष्ट शैलियॉ या घराने विकसित हुए, देखा जाये तो तबले का प्रत्येक घराना एक दूसरे से किसी न किसी रूप में सम्बध है किन्तु तबले का पंजाब घराना स्वतंत्र रूप से विकसित हुआ है।

इस घराने के वादकों ने पखावज के बोलों को ही बन्द करके तबला वादन की एक पृथक व नवीन शैली विकसित की इस प्रकार पखावज की समस्त विशेषताओं की झलक इस बाज में दिखाई देती है इसमें खुले व जोरदार बोलो की प्रचुरता है। इस घराने की वादन शैली में चारों अँगुलियों के प्रयोग के साथ तबले पर थाप का प्रयोग होता है। पंजाब के वादन में विशेष रूप से दीपचन्दी अंग की बंदिशों लम्बी लम्बी गते, गत परनो व तोड़ो का समावेश है। पारंम्परिक रूप से पंजाब घराने में कायदा व पेशकार जैसी बंदिशे नहीं थी, दीपचन्दी के वजन में बनाये गये, ''पंजाबी चाले'', पंजाब की प्राचीन वादन शैली की एक विशेषता है मिश्र जाति में बंधी हुई बढ़ैया गते पंजाब घराने में प्रचलित है। इस घराने की वादन शैली में बॉट का काम तथा बंदिशे लयकारी के हिसाब से गणित पर आधारित अत्यधिक जटिल होती है । उदाहरण स्वरूपचक्रदारों में साढे नौ मात्रा का पल्ला -, पौने दो मात्रा का दम इसके अतिरिक्त बांये पर मीड का काम तथा दांये पर लचीलापन, जोरदार खुला वाज, चारों अंगुलियों के साथ तबले पर थाप का प्रहार बोलों व बंदिशों पर भाषा का प्रभाव जैसे - धिर धिर किट को धेर धेर केटे बोलते है ऐसा इसलिए भी है क्योंकि पंजाब में आधे शब्द का इसके अतिरिक्त गतों व रेलों उच्चारण नहीं होता को अन्य बंदिशों की अपेक्षा अधिक महत्व देना, कठिन लयकारी, खुले हाथ से बंद बोलों में प्रवीणता, पखावज व मृदग शैली के बोलों का तबले पर सुन्दर प्रयोग, हाथ से ताल का सुंदर प्रस्तुतिकरण, श्रृंगार युक्त बंदिशे व इनमें ओज गति व तीव्रता, कायदे का कम व जटिल प्रयोग, लमझण कायदों का प्रचलन व 3 स्वयं द्वारा निर्मित तालों के ठेके के बोलों का निर्माण व वादन उदाहरण स्वरूप दादरा ताल का पंजाबी स्वरूप -

6 मात्रा -

पहला प्रकार -	धा	धिं	ता	धा	तिं ता
	x			o	
दूसरा प्रकार -	धा	धिं	s	ना	के धिं
	x			o	

4इसके अतिरिक्त कुछ विशेष बोलों का प्रचलन जैसेकृतन्न -, धाड़ागेने, धातीनाडा, घतेट, धेरधेरकत, गेदिन, दुंगदुंग, नगनग, धणीनाड़ा, गदिन्नाड, धाड़धा, कताडन, इत्यादि बोलों का प्रयोग पंजाब घराने में खूब किया जाता है। उपरोक्त विशेषताओं का प्रचलन तो पंजाब की वादन शैली में घराने के प्रारम्भ से ही रहा है 5 किन्तु वर्तमान समय में पंजाब का तबला सुनते है तो उसमें नवीनता परिलक्षित होती है इस श्रेय स्वर्गीय उस्ताद अल्लारखा खां जी व आपके पुत्र जिनके द्वारा आज तबला वाद्य प्रत्येक व्यक्ति द्वारा जाना जाता है उस्ताद जाकिर हुसैन जी को जाता है । आपने इस घराने के स्वरूप अर्थात वादन शैली को बदल दिया। आपने अपने वाद में पेशकार का ऐसा अद्भुद स्वरूप समाविष्ट किया जो अन्य घराने से एकदम पृथक था आपके द्वारा रचित पेशकार की त्रिस्त्र जाति की मूल बंदिश इस प्रकार है-

धाडक्डध	sधाs	तिsधा	sधाs
x			
धीsन	sधाs	धाsधी	sनाs
2			
ताsक्sता	sताs	तिsता	sताs
o			
धीsना	sधाs	धाsधी	sनाs
3			

इसी पेशकार का विस्तार उस्ताद जाकिर हुसैन जी भी किया करते है लेकिन उनके पैशकार में दिल्ली व फर्रूखाबाद घराने के पेशकार की भी छाया प्रतीत होती है । उस्ताद अल्ला रखा खां जी ऐसे पहले वादक थे जिन्होने कठित ताल एवं क्लिष्ट लयकारी का स्वतंत्र वादन एवं संगत दोनो में प्रयोग किया साढे सात मात्रा, साढे ग्याराह मात्रा, पौने नौ ऐसे कठिन तालों में स्वतंत्र वादन का प्रस्तुतिकरण किया, आपसी तिहाईयां अनोठी होती

थी जो आधुनिक तबला वादकों के लिए आधार है। जैसा कि पूर्व वर्णित है पंजाब की वादन शैली में कायदे बहुत कम थे व जो थे वे काफी लम्बे थे अतः उन्हें लमझण कायदे के नाम से भी सम्बोधित करते हैं आपने अपने क्लिष्ट लयकारी पर आधारित , ऐसे कायदों का समावेश पंजाब की वादन शैली में किया जिनका विस्तार अत्यन्त कठिन था। उदाहरण स्वरूप एक कायदा-

धाती	धागे	नाधा	धाधा	देधा
तीधा	गेना	धीना		
x				
ऽधा	गेना	धीना	ऽधा	तीधा
गेना	तीना	कीन		
o				
ताती	ताके	नाता	ताता	टेता
तीधा	गेना	तीन		
x				
ऽधा	गेना	धीना	ऽधा	तीधा
गेना	तीना	कीना		
o				

इसके अतिरिक्त आपने पंजाब की नवीन वादन शैली में बढैया की गतों का खूब समावेश किया अतः अल्लारखा खां जी ने पंजाब घराने की नवीन वादन शैली के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

परिणाम- प्रस्तुत शोध पत्र में तबले की पंजाब घराने की पारम्परिक व वर्तमान वादन शैली जो मुख्य रूप से अल्लारखा खां जी द्वारा विकसित हुई के परिणामस्वरूप एक नवीन शैली प्राप्त हुई जिसका स्वरूप शोध पत्र में प्रस्तुत किया गया है। जो मुख्य रूप से रचनात्मक विशेषताओं पर आधारित है।

निष्कर्ष - निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि पंजाब घराने की प्राचीन वादन शैली पर पखावज का प्रभाव रहा क्योंकि मुख्यतः पखावज के बोलों को बन्द करके तबला वादन की नवीन शैली का विकास हुआ । भाषा का प्रभाव यहाँ की बंदिशों में स्पष्प दिखता है इस घराने की लयकारी में ठेके के बांट का काम तथा लयकारी के हिसाब से गणित का जटिल प्रयोग जैसे - चक्करदारों में साढे नौ मात्रा का पहला और पौने दो मात्रा का दूसरा पौने मात्रा कादम इत्यादि इसके अतिरिक्त लमझण कायदे, दीपचंदी अंग की बंदिशों, लयकारी युक्त तिहाईयां, परन, चक्करदार, गत, रेलो का समावेश प्राचीन वादन शैली मे रहा। उस्ताद अल्लारखा खां ने विशेष रूप से पेशकर व क्लिष्ट लयकारी युक्त कायदों जिनका ताली खाली विभाजन आसानी से सम्भव नहीं था, का समावेश कर पंजाब की वादन शैली को एक नवीन रूप प्रदान किया। आपके पुत्र आपकी इस नवीन परम्परा में अपनी कला का समावेश करते हुए इस घराने की वादन शैली को एक नवीन आयाम प्रदान कर रहे हैं।

संभावना- भविष्य में इस शोध पत्र द्वारा इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए नवीन शोध मार्ग प्रशस्त होगें क्योंकि कोई भी शोध कार्य अपने में परिपूर्ण नहीं होता उसमें सदैव नवीन शोध हेतु संभावनाएं बनी रहती है क्योंकि पंजाब घराने की वादन शैली पर बहुत कम लिखा गया है। अतः निश्चित रूप से यह शोध पत्र उपयोगी साबित होगा।

संदर्भ ग्रन्थ

1. मिश्र विजयशंकर)2015), I Art and science of playing Tabla, Ministry of Information and Boradcasting Government of India, Page – 56
2. शर्मा मोहिनी)2011), प्रमुख तालवाद्य पखावज तथा तबले की विभिन्न परम्पराएं अनुभव पब्लिशिंग हाऊस इलाहाबाद Page – 157 & 158
3. पैन्तल गीता)2011) पंजाब की संगीत परम्परा, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ -173
4. श्रीवास्तव, ग्रीश चन्द्र)2018) ताल परिचय, भागदो-, संगीत वादन, प्रकाशन पृष्ठ-21
5. गर्ग प्रभुलाल)2020) संगीत विशारद, संगीत कार्यालय हाथरस उ0प्र0, पृष्ठ 804